अमर उजाला

प्रवाह

नई दिल्ली । मंगलवार, 7 मई 2019

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

आशावाद वह विश्वास है जो उपलब्धि की ओर ले जाता है। आशा और विश्वास के बिना कुछ नहीं किया जा सकता है।
-हेलेन केलर

अमेरिकी लेखिका

फैनी तूफान को लेकर प्रधानमंत्री मोदी के फोन का जवाब न देने पर ममता की सफाई में छिपी सियासत साफ देखी जा सकती है, जबकि सांविधानिक मूल्यों का तकाजा है कि प्राकृतिक आपदा के समय सियासी हितों को आड़े नहीं आना चाहिए।

तूफान पर राजनीति

ओडिशा के तटीय इलाकों में काफी नुकसान पहुंचाने वाला चक्रवाती तूफान फैनी थम गया है, मगर पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल की सियासत में इसने हलचल पैदा कर दी है, जहां अभी दो चरणों के चुनाव बाकी हैं। असल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को राज्य में एक चुनावी रैली में कहा कि उन्होंने तूफान से उपजे जमीनी हालात का जायजा लेने के लिए राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को दो बार फोन किया था, मगर उनकी ओर से कोई जवाब नहीं आया। दूसरी ओर ममता बनर्जी ने भी एक चुनावी रैली में सफाई दी कि वह तूफान के हालात का जायजा लेने के लिए खड़गपुर में थीं, इसलिए प्रधानमंत्री से फोन पर बात नहीं कर सकीं। मगर बात इतनी सरल है नहीं, इससे पहले तृणमूल कांग्रेस की ओर से यहां तक कह दिया गया था कि प्रधानमंत्री कार्यालय से मुख्यमंत्री के दफ्तर में कोई फोन ही नहीं आया था! दरअसल फैनी से संभावित नुकसान को बचाने में ओडिशा काफी हद तक कामयाब रहा है, इसके बावजूद वहां तीस से अधिक लोगों की मौत हो गई और सरकारी तथा निजी संपत्ति को काफी नुकसान पहुंचा। प्रधानमंत्री मोदी ने मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के साथ न केवल प्रभावित क्षेत्रों का हवाई जहाज से मुआयना किया, बल्कि एक हजार करोड़ रुपये की केंद्रीय मदद के अलावा मृतकों के परिजनों के लिए अलग से मदद दिए जाने का एलान भी किया है। यही नहीं, उन्होंने मुख्यमंत्री नवीन पटनायक की लाखों लोगों को समय रहते सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने की तारीफ भी की। हालांकि यह भी सच है कि ओडिशा में चुनाव हो चुके हैं, और अभी पश्चिम बंगाल में चक्रवाती तूफान के कहर से प्रभावित सीटों पर मतदान होने हैं। ऐसे में ममता बनर्जी को अपनी पार्टी के हितों की चिंता हो सकती है, क्योंकि पिछले कुछ वर्षों में भाजपा ने पश्चिम बंगाल में न केवल अपना आधार बढ़ाया है, इस चुनाव में उसे इस राज्य से काफी उम्मीदें हैं। लिहाजा ममता प्रधानमंत्री मोदी के साथ मंच साझा करने से बचती हैं। इससे पहले उन्होंने आयुष्मान भारत को लेकर भी ऐसा ही रवैया दिखाया था और वह यहां तक कह चुकी हैं कि केंद्र सरकार से कोई फंड नहीं लेंगी! जबकि सांविधानिक और लोकतांत्रिक मूल्यों का तकाजा है कि केंद्र और राज्य में सत्तारूढ़ दलों के सियासी हितों को खासतौर से प्राकृतिक या मानवीय आपदा के समय आड़े नहीं आना चाहिए।

खुले में बर्बाद होते अन्न की कहानी

लोकतंत्र के सबसे बड़े त्योहार आम चुनावों के बीच गेहूं कटाई का मौसम शबाब पर है। 'अन्न का कटोरा' यानी पंजाब और हरियाणा में गेहूं की कुल कितनी पैदावार होगी इसका आधिकारिक आंकड़ा आने में वक्त लगेगा, लेकिन आरंभिक अनुमानों के मुताबिक इन दोनों राज्यों में रिकॉर्ड 310 लाख टन की पैदावार हो सकती है।

पंजाब में 180 लाख टन गेहूं की पैदावार होने की उम्मीद है, जबकि पड़ोसी राज्य हरियाणा 130 लाख टन की बंपर पैदावार की अपेक्षा कर रहा है। इस बार सर्दियों के मौसम के लंबा खिंचने के कारण गेहूं की कटाई में देरी हुई है, लेकिन इसने उत्पादकता बढ़ाने में मदद की है। इस साल पंजाब में राष्ट्रीय औसत 32 क्विंटल की तुलना में प्रति हेक्टेयर 52 क्विंटल गेहूं होने की उम्मीद है। लेकिन संग्रहण की पर्याप्त और उचित व्यवस्था के अभाव ने गेहूं की इस जबर्दस्त पैदावार से पैदा हुए उत्साह को ठंडा कर दिया है। इन दोनों राज्यों से गुजरते हुए देख सकते हैं कि किस तरह से राष्ट्रीय राजमार्गों के किनारे मंडियों के बाहर गेहूं के ढेर पड़े हुए हैं। गेहूं कटाई के मौसम के चरम पर पंजाब में गेहूं की नई आवक के रख-रखाव के लिए शायद ही कोई ऐसी जगह हो, जहां गेहूं को ढक कर रखा जा सके। पिछले साल का 12 लाख टन गेहूं का स्टॉक पहले ही खुले में पड़ा हुआ है, जिसे तकनीकी रूप से कवर्ड ऐंड प्लिंथ (कैप) स्टोरेज कहा जाता है और इसका मतलब है कि अन्न से भरे गेहूं के बोरे खुले आसमान के नीचे पड़े हुए हैं, जिन्हें काले तिरपालों से ढक दिया गया है।

पंजाब के पास 158.5 लाख टन कवर्ड स्टोरेज क्षमता है, जिनमें पिछले मौसम में खरीदे गए 143 लाख टन चावल और गेहूं रखे हुए हैं। इसके अलावा इसके पास कैप स्टोरेज के रूप में 75 लाख टन संग्रहण की अतिरिक्ति क्षमता है, जिनमें पिछली बार का 12 लाख टन अन्न रखा हुआ है। इसके अलावा राइस मिलों से 20 से 22 वैगन चावल यहां पहुंचने की उम्मीद है। चूंकि चावल के रख-रखाव में नुकसान से बचने के लिए अतिरिक्त सावधानी बरतनी पड़ती है, इसलिए इसे हमेशा ढकी हुई जगहों पर रखा जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो गोदामों में रखे जाने के लिए चावल को हमेशा पहली प्राथमिकता मिलती है। साल दर साल वही कहानी दोहराई जा रही है। इस साल 132 लाख टन गेहूं की खरीद का अनुमान है और खरीदा गया अधिकांश गेहूं खुले में पड़ा रहेगा।

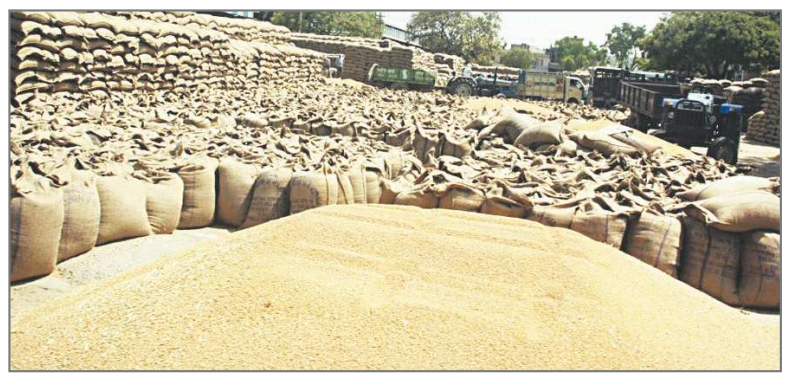

पंजाब-हरियाणा में गेहूं की बंपर पैदावार का अनुमान है, लेकिन हर साल की तरह इस बार भी इनका संग्रहण एक बड़ी चुनौती है। हर बीतते साल में अन्न संग्रहण का संकट बदतर होता जा रहा है।

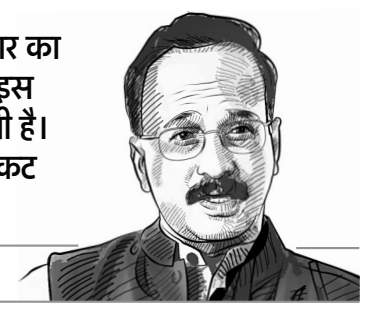

देविंदर शर्मा, कृषि नीति विशेषज्ञ

पिछले साल भी जब मंडियों में नए गेहूं की आवक शुरू हुई थी, तब पहले के स्टॉक का 20 लाख टन गेहूं खुले में पड़ा हुआ था। मुझे याद है कि खरीद के मौसम के चरम पर 70 लाख टन ताजा आवक को कैप स्टोरेज के तहत खुले में रखना पड़ा था। प्राथमिक तौर पर ऐसा पिछले साल खरीदे गए चावल और गेहूं की निकासी न कर पाने की अक्षमता के कारण हुआ। तकरीबन 90 लाख टन गेहूं को पिछले साल खुले में रखना पड़ा था, जिसमें से 12 लाख टन गेहूं अब भी खुले में पड़ा हुआ है।

स्थिति में कुछ सुधार हो सकता है, बशर्ते कि संगृहीत अन्न को जितनी जल्द हो सके राज्य से बाहर भेजा जाए। पंजाब के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति सचिव के ए पी सिन्हा ने कहा है कि हम खरीद मौसम के अंत तक संग्रहण की जगह खाली करवा लेंगे। मैं समझ सकता हूं कि हर साल राज्य प्रशासन को नौकरशाही से जुड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ता है, वह भी दो बार। एक बार तब जब गेहूं की आवक होती है और कुछ महीने बाद दूसरी बार तब जब धान की खरीद का मौसम आता है। तथ्य यह है कि हर बीतते साल में अन्न संग्रहण का संकट बदतर होता जा रहा है। करीब तीस वर्षों से तो मैं देख रहा हूं कि अन्न संग्रहण की कैसी बदइंतजामी है। वार्षिक खाद्य उत्पादन का लक्ष्य तय करना तो नीतिगत एजेंडा होता है, लेकिन गेहूं और चावल के खरीदे गए एक-एक दाने का प्रबंधन करना राजनीतिक प्राथमिकताओं में सबसे निचले क्रम पर है। भरपूर- बंपर पैदावार और बढ़ते खाद्य अपव्यय का यह विचित्र विरोधाभास खाद्य प्रबंधन के सभी कानूनों को धता बताता है। मैं नहीं समझ पाता कि कैसे नीति नियंता इसकी वजह से होने वाली खाद्यान्न की बर्बादी की ओर से आंखें मूंदे रहते हैं।

मुझे हमेशा यह लगता है कि खाद्यान्न की बर्बादी रोकने की अपेक्षा सिर्फ किसान से ही की जा सकती है; मानो खरीदे गए कीमती खाद्यान्न को बर्बाद करना सरकार का अधिकार हो। निरंकुशता के साथ संगृहीत खाद्यान्न की गुणवत्ता को खराब होने दिया जाता है, जिससे यह अक्सर मनुष्यों के खाने लायक नहीं रह जाता। यह एक राष्ट्रीय शर्म की बात है। आखिर खाद्यान्न के संग्रहण के लिए गोदामों के निर्माण के लिए रॉकेट साइंस की जरूरत नहीं है। हर बार जब भी मैं यह सुनता हूं कि सरकार बुनियादी ढांचे में निवेश करने जा रही है, तो बाद में पता चलता है कि इससे सुपर हाइवे का निर्माण किया गया। मैं हाइवे के फैलते नेटवर्क के खिलाफ नहीं हूं, लेकिन इसके अलावा ऐसे कई क्षेत्र हैं, जहां सार्वजनिक धन का निवेश करने की जरूरत है। 2017 में वित्त मंत्री अरुण जेटली ने 2022 तक 83,677 किलोमीटर लंबी सड़कों के निर्माण के लिए 6.92 लाख करोड़ रुपये के पैकेज की घोषणा की थी। यदि उन्होंने इसमें से सिर्फ एक लाख करोड़ रुपये खाद्यान्न स्टोरेज क्षमता बढ़ाने के लिए रख दिए होते, तो खाद्यान्न के बर्बाद होने की समस्या से निजात मिल जाती।

इससे पहले यूपीए सरकार ने देश भर में ढाई लाख पंचायतों में पंचायत घर का निर्माण करवाया था। उस समय भी मैंने देशभर में खाद्यान्न गोदाम के निर्माण के लिए निवेश करने का सुझाव दिया था। वाकई टेलीविजन पर आने वाली गोदामों में बर्बाद होते खाद्यान्न या मंडियों में बारिश से भीगते खाद्यान्न के बोरों की तस्वीरें कभी भुलाई नहीं जा सकती। खासकर तब और जब 119 देशों के ग्लोबल हंगर इंडेक्स में भारत 103 वें स्थान पर हो। दुनिया की एक चौथाई भूख से पीड़ित आबादी भारत में रहती है, एक ऐसे देश में जहां रख रखाव के अभाव में भारी मात्रा में खाद्यान्न को बर्बाद होने दिया जाता है। मैं अब भी नहीं समझ पा रहा हूं कि यह मुद्दा राजनीतिक प्राथमिकता क्यों नहीं बन पा रहा है।

अंतर्ध्वनि

>> नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

गुलमोहर की तरफ ताकने के बजाय जरा गुलमोहर बनकर देखें

बहुत तपन है। सारे पेड़ झुलस रहे हैं, पत्तियां मुरझा गईं, हरे-भरे तने ठूंठ में बदल गए, लेकिन गुलमोहर चटख लाल रंग में खिल रहा है। खिले गुलमोहर को देखकर लगता है कि हां, अभी जीवन-शक्ति जीवित है, संघर्ष की तपन में खिलने की क्षमता जीवित है। गुलमोहर गर्मी में खिलता है। गर्म लू के थपेड़े, सूरज का आक्रोश और इस आक्रोश से भयभीत अन्य फूलों की भीरुता उसकी जिजीविषा को नहीं डिगा पाती। वह अकेला खिलता है, उसका कोई साथ नहीं देता, मगर

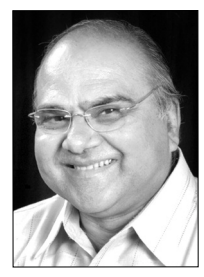

वह अपने संकल्प से डिगता नहीं। वह सूरजमुखी के फूल की तरह अवसरवादी भी नहीं कि सूरज की दिशा के सा थ - सा थ अपनी दिशा भी बदलता रहे। उसकी दिशाएं उसके खुद अपने मन की होती हैं। गर्मी ज्यों-ज्यों बढ़ती है उसकी सुर्खी भी बढ़ती जाती है। जिन्हें हम लू के थपेड़े कहते हैं वे उसके लिए सुहावनी बयार के मृदु झोंके हैं, जिसे हम झुलसना समझते हैं वह उसके लिए मुस्कराना है। गर्मी ने गुलमोहर की गंध छीन ली, उसकी पांखुरियों की नमी छीन ली, मगर उसकी दमकती कांति को नहीं छीन सकी। गर्मी के आरंभ होते ही कोई पहाड़ पर जाता है, कोई कश्मीर, जो जा नहीं पाते वे कूलर, एयरकंडीशनर और तेज ठंडी हवा फेंकने वाले पंखों की तलाश करने लगते हैं। दोषी हम खुद हैं जो गर्मी के भय से दुबक जाते हैं, और पर्यावरण के असंतुलन का विश्लेषण करते हुए सूरज को दोषी ठहराने लगते हैं। हमने वन काट दिए और पर्यावरण के विभाग खोल लिए, सूरज को खुद उकसा दिया और अपने लिए डीलक्स एसी रूम की व्यवस्था कर ली। वैशाख या जेठ की तपती दोपहर में खेत जोतते किसान को सूरज से कोई शिकायत नहीं, पर एसी रूम में बैठकर सूरज को कोसना हमारी आदत हो गई। जरा गुलमोहर की तरफ ताकने के बजाय गुलमोहर बनकर तो देखें।

-हिंदी लेखक और ललित निबंधकार

मंजिलें और भी हैं

>> शुभम चौरसिया

कभी भूखा सोता था, आज इंजीनियर बनने के करीब हूं

मैं बिहार के गया शहर का रहने वाला हूं। बचपन से ही मैं पढ़ने में तेज था और खासकर विज्ञान में मेरी ज्यादा रुचि थी। मैं इलेक्ट्रिकल इंजीनियर बनना चाहता था। मेरे पिता की पान की दुकान थी, जिससे ज्यादा आय नहीं होती थी। कई बार रात को हम सबको भूखे ही सो जाना पड़ता था। पिता मुझसे पढ़ाई छोड़कर कोई काम कर लेने की सलाह देते थे, पर मैं पढ़ना चाहता था। मुझे याद है कि जब मैं दसवीं में पढ़ रहा था, तभी एक रात घर लौटकर पिता ने मुझे बताया था कि दसवीं के बाद वह मेरी पढ़ाई का खर्च नहीं दे पाएंगे, क्योंकि दुकान से आमदनी बहुत ही कम रह गई थी। मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई थी। बहुत दिनों तक पढ़ने में मेरा मन नहीं लगा। स्कूल में मैंने जब अपने कुछ साथियों को यह बात बताई, तो वे बहुत दुखी हुए, क्योंकि मैं क्लास का सबसे होनहार छात्र था और हर परीक्षा में अव्वल आता था। उन्हीं साथियों में से कुछ ने यह बात शिक्षकों को बताई, तो उनमें से एक शिक्षक ने, जो मेरे क्लास टीचर थे, मुझे भरोसा दिलाया कि वह मेरी हरसंभव मदद करेंगे।

मेरा लक्ष्य आईआईटी, दिल्ली में दाखिला लेकर इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग की पढ़ाई करना है।

उन्होंने शहर के ही मगध-30 के संचालक अभयानंद जी को मेरे बारे में बताया, तो एक दिन वहां से मुझे बुलावा आया। यह वही अभयानंद जी थे, जो पहले आनंद कुमार जी के साथ सुपर-30 चलाते थे। दो इंट्रेंस टेस्ट और इंटरव्यू के बाद मगध-30 में मेरा चयन हो गया। अब मुझे यहां दो साल रहना था। इस संस्था में सिर्फ होनहार गरीब बच्चों को इंजीनियरिंग और मेडिकल की कोचिंग दी जाती है। कोचिंग के साथ-साथ यहां रहना-खाना भी मुफ्त है। अभयानंद जी और पंकज कुमार जी के दिशा-निर्देश में मैं वहां कड़ी मेहनत करने लगा। बीच-बीच में मगध-30 के पुराने छात्र भी, जो अब अच्छी नौकरियों में थे, हमें पढ़ाने के लिए आते थे।

अंततः जेईई-मेन में मुझे 99.56 प्रतिशत अंक मिले। मैंने बहुत मेहनत की थी। फिर भी मुझे उम्मीद नहीं थी कि मेरा प्रदर्शन इतना शानदार रहेगा। मैं इसका श्रेय अभयानंद सर को देता हूं, जिनके दिशा-निर्देश के बगैर मैं यहां तक नहीं पहुंच सकता था। मेरी इस सफलता ने मेरे पिता को अभिभूत कर दिया है। दो साल पहले तक वह बेहद निराश थे, क्योंकि दुकान का काम अच्छा नहीं चल रहा था। आज मेरी सफलता से वह इतने खुश और उत्साहित हैं कि छोटे भाई की पढ़ाई जारी रखने का फैसला किया है, जबकि थोड़े ही समय पहले तक वह उसे पढ़ाई बंद कर दुकान में उनका हाथ बंटाने की बात कह चुके थे। मेरा छोटा भाई भी बहुत मेधावी है और गणित व विज्ञान में उसकी रुचि है। पिता का कहना है कि अगर उसका रिजल्ट अच्छा रहा, तो उसे भी मगध-30 में दाखिला करवाने के बारे में सोचा जाएगा, ताकि वह भी जिंदगी में कुछ बन जाए।

मैं इन दिनों जेईई-एडवांस्ड की तैयारी कर रहा हूं, जिसकी परीक्षा आगामी 27 मई को है। मेरा लक्ष्य आईआईटी, दिल्ली में दाखिला लेकर इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग की पढ़ाई करना है। आज जब मैं अपनी उपलब्धि की ओर नजर दौड़ाता हूं, तो पाता हूं कि मेरी मेहनत के अलावा इसमें मेरे माता-पिता के त्याग और मगध-30 में मिले दिशा-निर्देश का बड़ा योगदान है। जब भी मैं घर आता हूं, तो पिता को बहुत खुश और उत्साहित पाता हूं। आसपास के अनेक लड़के, जो कुछ समय पहले तक आवारागर्दी या फिर छोटा-मोटा काम करते थे, आज पढ़ाई के प्रति गंभीर हैं।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

टला नहीं है फैनी का खतरा

नासा ने शनिवार को फैनी प्रभावित देशों को जानकारी दी कि तूफान का प्रकोप आगे भी जारी रहेगा। पर चौतरफा तैयारी और सतर्कता को देखते हुए उम्मीद करनी चाहिए कि फैनी अगर दोबारा मजबूत होता है, तब भी ज्यादा नुकसान नहीं हो पाएगा।

नासा ने चक्रवाती तूफान फैनी से प्रभवित देशों को सतर्क रहने के लिए कहा है। उपग्रह के जरिये ली गई ताजा तस्वीरों से उसने आंका है कि अभी आगे भी यह तूफान अपना रौद्र रूप दिखाएगा। आगे क्या होगा पता नहीं, पर फैनी की दहशत चारों ओर फैली है। भारत का समूचा समुद्री व धरातलीय क्षेत्र फैनी के डर से आक्रांत है। ओडिशा, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल में इसका कमोबेश असर दिखा है। तूफान से बचाव के लिए खुद प्रधानमंत्री दिल्ली में अधिकारियों के साथ आपातकालीन बैठक कर चुके हैं। बचाव के सभी पुख्ता इंतजाम किए गए हैं और सुरक्षा एजेंसियों की बैठकें लगातार जारी हैं।

फैनी तूफान की गति दूसरे तूफानों से ज्यादा आंकी गई है। तूफान की चपेट में आने वाले सभी संभावित क्षेत्रों में प्रशासन ने अलर्ट जारी कर दिए हैं। ओडिशा में अभी तक फिलहाल काफी नुकसान हुआ है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, वहां तीस से अधिक लोग मारे गए हैं, जबकि करोड़ों की संपत्ति का नुकसान हुआ है। वहां राहत-बचाव में कोई बाधा न आए, इसके लिए समयावधि से पहले ही लोकसभा चुनाव के लिए लगाई गई आदर्श आचार संहिता हटा दी गई है और केंद्र से लेकर राज्य सरकार पूरी तरह मुस्तैद है। ओडिशा में कोहराम मचाने के बाद फैनी अब बंगाल में दाखिल हो चुका है और पिछले दो दिनों से वहां और झारखंड में तूफानी हवाओं के साथ मूसलाधार बारिश हो रही है।

नासा ने शनिवार को फैनी की ताजा तस्वीरें और नवीनतम जानकारी प्रभावित देशों से साझा कीं और बताया कि तूफान का प्रकोप आगे भी जारी रहेगा। नासा के मुताबिक फैनी एक उष्णकटिबंधीय तूफान है, जो मानवीय हिमाकत के बाद उत्पन्न हुआ है। किसी भी चक्रवाती तूफान का नामकरण उस स्थिति में किया जाता है, जब उसकी रफ्तार 60 से 70 किलोमीटर प्रति घंटा हो। जब इसकी रफ्तार सौ या उससे ज्यादा हो, तो वह तूफान गंभीर चक्रवाती तूफान कहा जाता है। वहीं, अगर अन्य तूफान की रफ्तार 200 किमी प्रति घंटे से ज्यादा होती है, तो उसे सुपर साइक्लोन की संज्ञा दी जाती है। फैनी को इसी श्रेणी में माना गया है। तूफान का नामकरण वही देश करता है, जिसके क्षेत्र में यह जन्म लेता है। चूंकि फैनी तूफान बांग्लादेश से शुरू हुआ, इसलिए उसी ने इसका नामकरण किया।

रमेश ठाकुर

इंसान लगातार जंगलों, नदियों, समुद्रों से छेड़छाड़ कर रहा है। उसी के नतीजतन फैनी के रूप में प्रकृति का यह रौद्र रूप सामने आया है। धरती से छेड़छाड़ के कारण प्राकृतिक आपदाओं की आशंकाएं बढ़ गई हैं। धरती पर इंसानी जीवन को सुरक्षित रखने के लिए प्रकृति से खिलवाड़ को तत्काल प्रभाव से त्यागना होगा, नहीं तो आने वाले वक्त में इंसानी जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती।

फिलहाल फैनी की अनहोनी से बचने के लिए प्रभावित इलाकों में सरकारी अमला हरसंभव कोशिशों में जुटा है। एहतियात के तौर पर प्रशासन ने ओडिशा के सभी स्कूल-कॉलेजों को बंद करवा दिया है। सरकारी कार्यालयों में भी काम-धंधे बंद हैं। मछुआरों को सख्त हिदायत दी गई है कि जब तक प्रशासन का अलर्ट रहे, वे समुद्र में हरगिज न जाएं। समुद्र तट से अंदर करीब पांच सौ मीटर की दूरी पर अब भी लंबी-लंबी बौछारें बन रही हैं, जो तूफान के बने रहने का संकेत देती हैं। चौतरफा तैयारी और सतर्कता को देखते हुए उम्मीद करनी चाहिए कि फैनी अगर दोबारा मजबूत होता है, तब भी ज्यादा नुकसान नहीं हो पाएगा।

खुली खिड़की

भारत में पढ़ने वाले विदेशी छात्र

विश्व के विभिन्न देशों के छात्र उच्च शिक्षा के लिए बड़ी संख्या में भारत आते हैं। रिपोर्ट के मुताबिक इन देशों में अमेरिका पहले व कनाडा दूसरे स्थान पर काबिज है।

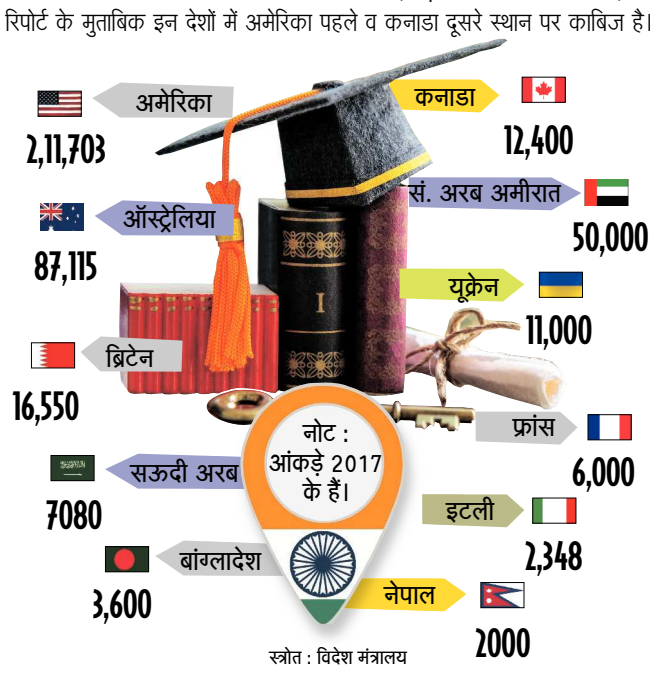

स्रोत : विदेश मंत्रालय

सत्संग

ग्लानि ज्ञान का मूल

आलंदी गांव के ब्राह्मणों में विसोबा चारी अत्यंत दुष्ट था। वह ज्ञानदेव, सोपानदेव एवं मुक्ताई जैसे बच्चों से द्वेष करता था। एक बार मुक्ता को मांडा (पतली रोटी) खाने की इच्छा हुई। मांडा बनाने के लिए विशिष्ट बर्तन की जरूरत होती है। ज्ञानदेव बर्तन लाने के लिए कुम्हार के पास जाने लगे, तो विसोबा भी उनके पीछे जाने लगा। ज्ञानदेव ने कुम्हारों से बर्तन मांगा, तो विसोबा ने उन्हें देने से मना कर दिया। ज्ञानदेव को खाली हाथ लौटना पड़ा। घर आकर ज्ञानदेव ने मुक्ता से कहा, आटा गूंथो। मगर बर्तन कहां है, मुक्ता ने पूछा। ज्ञानदेव बोले, मेरी पीठ है न। और उन्होंने अपनी पीठ सामने कर दी। मुक्ता ने भाई की पीठ पर ही मांडे सेंकना शुरू कर दिया। बिसोबा ने बच्चों का मजाक उड़ाने के लिए यह प्रपंच रचा था और अब उन सबके पीछे छिपकर खड़ा हो गया था। लेकिन उसने जब ज्ञानदेव की पीठ पर मांडे सिंकने का चमत्कार देखा, तो उसका घमंड चूर-चूर हो गया। उसे पश्चाताप हुआ कि व्यर्थ ही वह इन अबोध बालकों के प्रति ईर्ष्या भाव रखता था। उसने ज्ञानदेव के चरण पकड़े और माफी मांगी। यही ज्ञानदेव आगे चलकर संत ज्ञानेश्वर के रूप में जाने गए। विसोबा प्रभु की लीला से प्रभावित हो गया था। उसके स्वभाव में परिवर्तन आ गया। अब वह भी संत विसोबा के नाम से जाना जाने लगा था।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

राजू, पार्क और तितली

यह कहानी एक तितली की है, जो राजू को रोकने के लिए बार-बार उससे टकरा रही थी।

उस दिन राजू दफ्तर से जल्दी निकल गया था। कुछ देर पहले बारिश हुई थी। ठंडी हवा मन को बहुत सुहा रही थी। पास में ही एक नया पार्क, गुलाब वाटिका बना था। राजू का जाने कब से इस पार्क में जाने का मन था। उस दिन उसके कदम खुद ही पार्क की तरफ बढ़ चले। पार्क में पैदल चलने वालों के लिए बढ़िया मार्ग, आराम करने के लिए कुर्सियां, बच्चों के खेलने के लिए झूले, सुंदर-सुंदर फूल और वृक्ष लगाए गए थे। तभी उसने देखा, सामने मिट्टी का एक ढेर पड़ा था, जो बारिश की वजह से कीचड़ में तब्दील हो गया था। राजू कीचड़ से बचते-बचाते निकल ही रहा था, तभी अचानक उस पर हमला हो गया। लगातार कई बार उस पर हमला होता रहा। हमले में राजू को चोट नहीं लग रही थी, न ही उसके कपड़े गंदे हो रहे थे। एक तितली उसके ऊपर बार-बार पूरी ताकत से आकर टकरा रही थी। ऐसा लगता था कि वह जान-बूझकर उस पर हमला कर उसे आगे जाने से रोक रही थी। राजू जैसे ही तीन-चार कदम पीछे हट गया, तितली शांत हो गई। पर जैसे ही राजू ने आगे बढ़ने का प्रयास किया, वह तितली फिर उस पर हमला करने लगी। राजू दूसरी तरफ से निकला, तो वह तितली पीछे हट गई। वहीं, एक और तितली पड़ी थी, जो घायल थी और अंतिम सांसें गिन रही थी। शायद इसीलिए दूसरी तितली उस पर बार-बार हमला कर रही थी कि वह आगे न जाए और उसके पैर गलती से भी उस जख्मी तितली पर न पड़ जाएं। इतनी नन्ही-सी तितली अपने से हजार गुना बड़े शरीर वाले इंसान से भी सिर्फ इसलिए टकरा गई कि शायद उसे उस जख्मी तितली के साथ कुछ पल और बिताने के लिए मिल जाएं। तितली ने राजू को सिखा दिया कि चुनौती चाहे कितनी भी बड़ी हो उससे घबराना नहीं चाहिए, बल्कि डटकर लड़ना चाहिए।

जरूरत पड़ने पर ताकतवर व्यक्ति से भी टकराने में डरना नहीं चाहिए।